Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

3. भारतीय सिनेमा और गाँधी जी

डॉ. आरती पाठक
कालिंदी महाविद्यालय,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
artipathak@hotmail.com

सारांश

महात्मा गांधी की विचारधारा, विशेषतः अहिंसा, सत्य, समानता और सादगी के सिद्धांत, भले ही उन्होंने स्वयं फिल्मों में रुचि नहीं ली, फिर भी हिंदी सिनेमा पर गहरा प्रभाव डालते रहे हैं। गाँधी जी ने फिल्मों को समाज के लिए अनुपयोगी माना, लेकिन उनके जीवन, आंदोलन और मूल्यों ने अनेक फिल्मकारों को प्रेरित किया। दादा साहेब फाल्के, वी. शांताराम, महबूब खान, राज कपूर से लेकर राजकुमार हिरानी, आमिर ख़ान और विधु विनोद चोपड़ा जैसे समकालीन फिल्मकारों की रचनाओं में गांधीवादी मूल्य प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में परिलक्षित होते हैं।

गांधी जी ने केवल दो फिल्में देखीं— 'राम राज्य' और 'मिशन टू मॉस्को'—लेकिन उन्होंने सिनेमा के प्रति उदासीनता और अस्वीकृति की भावना बनाए रखी। इसके बावजूद उनके जीवन और विचारों को लेकर कई फिल्में बनीं, जैसे गांधी (1982), द मेकिंग ऑफ महात्मा (1996), गांधी माई फादर (2007), लगे रहो मुन्नाभाई (2006), आदि। इनमें से गांधी और लगे रहो मुन्नाभाई को जनता ने विशेष रूप से सराहा। गांधी के विचारों ने नारी सशक्तिकरण, सांप्रदायिक सौहार्द, सामाजिक न्याय और सत्याग्रह जैसे विषयों को हिंदी सिनेमा के कथ्य में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया। सिनेमा ने उनके आदर्शों को जनमानस तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, भले ही गांधी स्वयं इसके आलोचक रहे हों।

जयप्रकाश चौकसे जैसे विद्वानों ने गाँधी और सिनेमा के अंतर्संबंधों पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनका मानना है कि भारतीय सिनेमा के प्रारंभिक काल से लेकर आज तक गाँधीवादी मूल्यों की उपस्थिति बनी रही है, जो कभी फिल्मकारों की चेतन प्रेरणा तो कभी अवचेतन प्रभाव के रूप में सामने आई है। इस प्रकार, गांधी और हिंदी सिनेमा का

The Asian Thinker

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

संबंध विरोधाभासी होते हुए भी ऐतिहासिक, वैचारिक और सांस्कृतिक रूप से अत्यंत प्रभावशाली रहा है।

मुख्य शब्द – महात्मा गांधी, सिनेमा, अहिंसा, शांति, सत्याग्रह

प्रस्तावना

मुक्ति, अहिंसावादी विचारधारा, हिन्दी सिनेमा, महात्मा गाँधी, सत्याग्रह, गोलमेज सम्मेलन, घरेलू राजनीति और शासन, भारत 'जिस समय भारत की पहली फ़ीचर फिल्म राजा हरीशचंद्र रिलीज़ हो रही थी, उस वक्त मोहनदास करमचंद गाँधी अपनी मातृभूमि से 7,045 किमी। दूर साउथ अफ्रीका के डर्बन में अपने आख़िरी राजनीतिक अभियान को आकार दे रहे थे। पोरबंदर का यह वकील तब भारत वापसी की तैयारियों में भी जुटा हुआ था।'[1]

दशकों बीत गए, गाँधी और उनकी विचारधारा का प्रभाव अभी भी हिंदी सिनेमा पर नज़र आता है। दादा साहेब फाल्के, वी शांताराम, महबूब खान, राज कपूर से लेकर आज के फ़िल्मकार विधु विनोद चोपड़ा, आमिर ख़ानसे राजकुमार हिरानी तक दर्जनों फ़िल्मकार हैं, जिनकी फिल्मों में गाँधीवादी विचारधारा का असर साफ नज़र आता है। यह विचारधारा आज भी सिनेमा व आमजन को प्रभावित करती है।

कैसी विडंबना है कि जिस व्यक्ति ने फिल्म राम राज्य (2 जून 1944 को जुहू, बॉम्बे में गाँधी द्वारा देखी जाने वाली पहली व अंतिम फिल्म) भी पूरी न देखी और अधूरी छोड़ कर बीच में से उठ आया, वह कई फ़िल्मकारों का प्रेरणास्रोत बना। दादा साहेब फाल्के भी उनसे प्रभावित फ़िल्मकारों में से एक थे, जो अपनी संदेशपरक फिल्मों के लिए पहचाने जाते हैं। 'भारतीय सिनेमा के 25 साल पूरे हो जाने पर बॉम्बे का एक दैनिक अख़बार गाँधीजी के संदेश का इच्छुक था। सन् 1927 में इससे संबंधित एक प्रश्नावली इंडियन सिनेमैटोग्राफ कमेटी ने गाँधीजी को भेजी। गाँधीजी के सचिव महादेव भाई देसाई ने इसके उत्तर में स्पष्ट कर दिया कि गाँधीजी की सिनेमा में कोई रूचि नहीं है और वे सिनेमा की प्रशंसा करेंगे, ऐसी उम्मीद नहीं रखी जानी चाहिए।'[2]

गाँधीजी की राजनीतिक सभाएं सर्वधर्म प्रार्थना से शुरू होती थीं, जो लोगों को एक-दूसरे के धर्मों तथा आपसी विविधता का सम्मान करने के लिए प्रेरित करती थीं।

दादा साहेब फाल्के, शांताराम, महबूब, राज कपूर व हिरानी आदि की फिल्मों में गाँधी दर्शन के विभिन्न आयाम स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। इनकी फिल्मों में अहिंसा, प्रेम व बलिदान, हिंदू-मुस्लिम एकता, नगरीय व ग्रामीण जीवन शैली

में अंतर, अंधी व्यावसायिकता का विरोध, नारी उद्धार, नैतिक पतन की चिंता जैसे गाँधीवादी मूल्य प्रस्तुत किए जाते रहे हैं। ऐसा लगता नहीं है कि बहुत योजनाबद्ध ढंग से इन फ़िल्मकारों ने गाँधी दर्शन को आत्मसात् किया, बल्कि यह गाँधी संदेश का अपरोक्ष प्रभाव था, जो उनकी फिल्मों में उतर आया और व्यावसायिक सफलता का सूत्र भी बना। गाँधीवाद आख़िरकार जन-जन के मानस में जो बस गया था।

देश में पहली फिल्म रिलीज़ होने वाले दशक (1913-1922) में 90 से ज्यादा फिल्में बनाई गईं। उनमें से ज्यादातर धार्मिक, पौराणिक कथाओं पर आधारित थीं। अपने राजनीतिक व सामाजिक आंदोलनों में गाँधी इसी विचारधारा को एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य में उदारवादी दृष्टिकोण के साथ इस्तेमाल कर रहे थे। उन दिनों सिनेमा हॉल नहीं हुआ करते थे। सूर्यास्त के बाद एक टेंट में फिल्में चलाई जाती थीं। इसलिए ग्रामीण क्षेत्रों के दर्शक फिल्म देखने के बाद अंधेरे में पैदल वापस अपने घर जाते थे।

फिल्म,इतिहासकार, वितरक, फिल्म निर्माता और लेखक जयप्रकाश चौकसे के अनुसार भारतीय सिनेमा के पहले चरण में सिनेमाघरों का विस्तार होने लगा था। फिल्मों की मदद से आम जनता अपने भय व शंकाओं पर धार्मिक, नैतिक विचारों की मदद से विजय पाने के जतन में लगी थी। इसमें गाँधी के विचार व आंदोलन ख़ासे सहायक थे, क्योंकि गाँधी भी इसी राह के पथिक थे। वे यह भी कहते हैं कि गाँधीजी ने अंगरेज़ों के विरुद्ध अपने आंदोलनों में धर्म व मिथकों का बख़ूबी इस्तेमाल किया था। गाँधीजी की राजनीतिक सभाएं सर्वधर्म प्रार्थना से शुरू होती थीं, जो लोगों को एक-दूसरे के धर्मों तथा आपसी विविधता का सम्मान करने के लिए प्रेरित करती थीं। समकालीन हिंदी फिल्मों में भी इन विचारों का बहुत उपयोग किया गया। इसी के सहारे बहुत से फ़िल्मकार ऊंचे मुकाम तक पहुँचे।

गोल मेज़ सम्मेलन में भाग लेने महात्मा लंदन पहुंचे थे और उन्होंने वहां के एक महंगे होटल में ठहरने से इंकार कर दिया। इसके बजाय उन्होंने पूर्वी लंदन स्थित किंग्सले हॉल में कामगार श्रेणी के लोगों के साथ रहना पसंद किया।

प्रख्यात लेखक, फ़िल्मकार ख्वाज़ाअहमद अब्बास सहित कई लोगों ने गाँधीजी को सिनेमा के वृहत प्रभाव से अवगत कराने की कोशिश की। उन्हें बताया कि आम जनों के मानस पर सिनेमा का बहुत गहरा और व्यापक प्रभाव पड़ता है, लेकिन इस माध्यम को संदेह की नज़र से देखने वाले बापू ने अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए फिल्मों के बजाय प्रिंट मीडिया को ही तरजीह़ दी।

14 मार्च 1931 को भारत में पहली बोलती फिल्म अर्देशिर ईरानी की आलम आरा प्रदर्शित होने के बाद सिनेमा का प्रभाव निश्चित ही और व्यापक हो गया। इसके कुछ समय बाद ही अर्थात सितंबर 1931 में गाँधी व चार्ली चैपलीन की लंदन में अकस्मात भेंट हो गई। पांच साल बाद 1936 में चैपलिन ने अपनी विख्यात कृति मॉडर्न टाइम्स प्रस्तुत की। इसमें मशीनीकरण के कारण मेहनतकशों को हो रहे नुकसान का सटीक चित्रण किया गया था कि किस प्रकार मशीनें इंसान की जगह लेती जा रही हैं। एक तरह से देखा जाए तो यह गाँधी द्वारा किए जा रहे मशीनीकरण के विरोध की ही प्रस्तुति थी।

'गाँधी और चैपलिन की यह भेंट भारतीय इतिहास में एक दूसरी वजह से भी यादगार रहेगी। बीबीसी रेडियो 4 के एक कार्यक्रम 'मेकिंग हिस्ट्रीः गाँधी एंड चैपलिन' के मुताबिक दूसरे गोल मेज़ सम्मेलन में भाग लेने महात्मा लंदन पहुंचे थे और उन्होंने वहां के एक महंगे होटल में ठहरने से इंकार कर दिया। इसके बजाय उन्होंने पूर्वी लंदन स्थित किंग्सले हॉल में कामगार श्रेणी के लोगों के साथ रहना पसंद किया। द किंग्सले हॉल कम्यूनिटी सेंटर म्यूरियल लीस्टर चलाती थीं। युद्ध विरोधी ईसाई महिला लीस्टर 1925 में गाँधी आश्रम भी आ चुकी थीं।'[3]

महिला सशक्तिकरण की बात उठाती फिल्मों पर भी गाँधी का प्रभाव देखा जा सकता है। उदाहरण के तौर पर 1936 में बनी शांताराम की अमर ज्योति में हीरोइन अपने शराबी पति को ठीक करने का बीड़ा उठाती है। पुरुष प्रधान समाज में यह एक इंकलाबी विचार था, जो गाँधी की शिक्षा पर आधारित है।

'1932 में प्रकाशित अपनी पुस्तक एंटरटैनिंग गाँधी में लीस्टर ने गाँधी व चैपलिन की मुलाकात का प्रसंग बयान किया है। मेरे दिमाग में वह दृश्य बिल्कुल स्पष्ट है लिखते हुए उन्होंने बताया: "मि। गाँधी अपने हाथों में एक टेलिग्राम लिए ध्यानमग्न से बैठे थे। उनको घेरे बैठे सहायकगण किसी उत्तर की आशा में थे। जैसे ही मैं अंदर दाखिल हुई, एक भारी आवाज से वहां की खामोशी भंग हुई, उससे मिलने का कोई सवाल ही नहीं है, क्योंकि वह तो एक विदूषक है। इस भेंट को रद्द करने के लिए टेलिग्राम संबंधित सहायक की ओर बढ़ा दिया गया, तब मैंने उस पर लिखा नाम देखा। लेकिन आप इन्हें जानते हैं बापू? मैंने कौतूहल से पूछा, नहीं उन्होंने सपाट लहज़े में कहा और जानकारी के लिए मेरी ओर देखने लगे, जो उनके सहयोगी उन्हें नहीं दे सकते थे। चार्ली चैपलिन! विश्वविख्यात हीरो। आपको उनसे ज़रूर मिलना चाहिए। उनके काम का आधार आम लोगों का जीवन है। वे ग़रीबों को उसी तरह समझते हैं, जिस तरह आप समझते हैं। अपनी

फिल्मों में वे सदैव उन्हें बहुत मान देते हैं। तब 22 सितंबर 1931 को कैनिंग टाउन के बेकटन रोड स्थित डॉ। कटियाल के निवास पर स्थानीय लोगों को दो विभूतियों के स्वागत का गौरव प्राप्त हुआ।"[4]

महिला सशक्तिकरण की बात उठाती फिल्मों पर भी गाँधी का प्रभाव देखा जा सकता है। उदाहरण के तौर पर 1936 में बनी शांताराम की अमर ज्योति में हीरोइन अपने शराबी पति को ठीक करने का बीड़ा उठाती है। पुरुष प्रधान समाज में यह एक इंकलाबी विचार था, जो गाँधी की शिक्षा पर आधारित है।

1990 के दशक में आर्थिक उदारवाद की प्रक्रिया ने सिनेमा के प्रति आम-जन की धारणाएं भी बदल दीं। सिने प्रेमियों के लिए सादा जीवन उच्च विचार जैसे महात्मा के विचारों का कोई ख़ास महत्व नहीं रहा। इसी तरह गाँधी पर बनाई गई फिल्मों को भी दर्शकों का कोई खास रिस्पॉन्स नहीं मिला। हालांकि सर रिचर्ड एटनबरो की गाँधी (1982) इस मामले में अपवाद है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर की यह फिल्म ख़ासी सफल रही। इसके 14 साल बाद श्याम बेनेगल द्वारा बनाई गई द मेकिंग ऑफ द महात्मा (1996) असफल रही। इसके बाद कमल हसन की हे राम (2000) का भी यही हाल हुआ, हालांकि इसमें गाँधी की भूमिका सशक्त अभिनेता नसीरुद्दीन शाह ने निभाई थी। अलबत्ता राजकुमार हिरानी ने ज़रूर चतुराई भरा काम लिया और गाँधी के आदर्शों को लगे रहे मुन्ना भाई (2006) में बहुत दिलचस्प अंदाज़ में पेश किया, जिसे दर्शकों ने ख़ासा पसंद किया। नतीजतन फिल्म सुपरहिट रही।

फिल्मों और गाँधी की बात करें, तो यह सर्वविदित है कि महात्मा गांधी की फिल्मों में कोई रुचि नहीं थी। वह फिल्मों को समाज के लिए अनावश्यक मानते थे। 1928 में इंडियन सिनेमेटोग्राफ कमेटी की भेजी प्रश्नावली का दो टूक जवाब देते हुए उन्होंने लिखा था, 'मैंने कभी सिनेमा देखा ही नहीं है, लेकिन किसी बाहरी का भी इसने जितना अहित किया है और कर रहा है, वह प्रत्यक्ष है, यदि इसने किसी का भला किसी रूप में किया है, तो इसका प्रमाण मिलना बाकी है।'[5]

उन्होंने अन्य दो प्रसंगों में भी सिनेमा के बारे में अपनी राय रखी। 'हरिजन' पत्रिका के एक लेख में उनकी राय थी, 'सिनेमा-फिल्म ज्यादातर बुरे होते हैं।' उनकी ऐसी प्रतिक्रियाओं से आहत और व्याकुल होकर ख्वाजा अहमद अब्बास ने 'फिल्म इंडिया' पत्रिका के अक्टूबर,1939 के अंक में उनके नाम एक खुला पत्र लिखा। 80 साल पहले लिखे इस पत्र में अब्बास ने उनसे आग्रह किया था, "एक हाल के बयान में आपने सिनेमा को जुआ, सट्टा, घुड़दौड़ आदि जैसी बुराइयों के साथ

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

रखा है, जिससे आप जाति बहिष्कृत होने के डर से दूर रहते हैं। यह बयान किसी और ने दिए होते, तो इसमें चिंतित होने की जरूरत नहीं थी। आखिर अपनी-अपनी पसंद का मामला है... बापू आप एक महान आत्मा हैं। आपके हृदय में पूर्वाग्रहों के लिए कोई जगह नहीं है। हमारे छोटे से खिलौने- सिनेमा पर जो इतना अनुपयोगी नहीं है, जितना दिखता है, थोड़ा ध्यान दें और उदारतापूर्ण मुस्कान के साथ इसे अपना आशीर्वाद दें।' अब्बास के पत्र की फोटो कॉपी मुंबई स्थित भारतीय सिनेमा के राष्ट्रीय संग्रहालय में रखी गई है। इस संग्रहालय में पूरा एक फ्लोर गांधी और फिल्मों को समर्पित किया है।

भारतीय सिनेमा और गांधी

सिनेमा से अरुचि की महात्मा गांधी की स्पष्ट घोषणा के बावजूद सिनेमा ने उनमें रुचि ली। राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के नेतृत्व की राजनीतिक सक्रियता के अपने प्रभाव की वजह से वह फिल्मकारों के प्रिय रहे। उनका करिश्माई व्यक्तित्व आकर्षित करता रहा। यही वजह है कि ब्रिटिश सरकार ने भी उनके डॉक्यूमेंटेशन में कोताही नहीं की। उनकी पहली चलती-फिरती तस्वीर ब्रिटिश पाथे की 'न्यूजरील' में मिलती है। इसमें उन्हें 'कुख्यात आंदोलनकारी' कहा गया है। तब ब्रिटिश सरकार के लिए वह 'कुख्यात' और 'आंदोलनकारी' ही थे, लेकिन भारतीय फिल्मकारों की निगाह में उनका दर्जा अलग था। उनके लिए गाँधी एक उम्मीद थे।

ब्रिटिश सरकार फिल्मों के व्यापक असर से वाकिफ थी। सेंसरशिप की सख्ती थी। यही वजह है कि 1921 में प्रदर्शित मूक फिल्म 'भक्तविदुर' को प्रतिबंधित करते हुए उन्होंने लिखा था, 'यह विदुर नहीं है। यह गांधी है और हम इसकी अनुमति नहीं देंगे।' इस फिल्म में द्वारकानाथ संपत ने विदुर की भूमिका निभाई थी। उन्होंने बाद में एक संस्मरण में लिखा था कि दर्शकों को कुछ नहीं बताया गया था कि विदुर में गांधीजी की छवि है। लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों ने भांप लिया। बाद के दिनों में वी। शांताराम को भी ब्रिटिश अधिकारियों के आदेश पर अपनी फिल्म 'महात्मा' (1935) का शीर्षक बदल कर 'धर्मात्मा' करना पड़ा था। आजादी के पहले की कुछ और फिल्मों को भी सेंसर का कोपभाजन बनना पड़ा। महात्मा गाँधी के कद्दावर व्यक्तित्व और कार्यों को किसी एक फिल्म में समेट पाना किसी भी फिल्मकार के लिए

The Asian Thinker

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

नामुमकिन काम है। फिर भी उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के पहलुओं को फिल्मकारों ने जब-तब फिल्मों में उकेरने की कोशिश की है।‘ 1982 में रिचर्ड एटनबरो की ‘गांधी’ फिल्म आई थी। भारत सरकार के सहयोग से बनी ‘गांधी’ सर्वाधिक चर्चित और देखी गई फिल्म है। एटनबरो की ‘गांधी’ के निर्माण की कहानी रोचक है। इस फिल्म के निर्माण के पहले पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एटनबरो को सलाह दी थी कि गांधीजी को देवता की तरह न पेश करें। नेहरू की हिदायत और एटनबरो की सावधानी के बावजूद दर्शकों पर ‘गांधी’ फिल्म का असर किसी देवता से कम नहीं रहा।’[6]

रिचर्ड एटनबरो के पहले एक इतालवी फिल्मकार ने भी उनकी बायोपिक की तैयारी की थी। पंडित नेहरू से उनकी बातचीत हो गई थी, लेकिन फिल्मकार की आकस्मिक मृत्यु से उनका सपना पूरा नहीं हुआ। रिचर्ड एटनबरो को भी गाँधी के निर्माण और निर्देशन में अनेक दिक्कतें आईं। उन्हें नेहरू और भारत सरकार का भरपूर सहयोग मिला। भारत सरकार ने ‘गाँधी’ के निर्माण में निवेश भी किया था, जिसकी आलोचना भी हुई।

रिचर्ड एटनबरो की फिल्म में भी कमियाँ रेखांकित की गईं फिर भी इस फिल्म ने पॉपुलर माध्यम से महात्मा गाँधी को देश-दुनिया के दर्शकों के बीच पहुँचाया। उनके जीवन, संघर्ष और विजय से परिचित कराया। गौर करें कि आजादी और गाँधी जी के देहांत के बाद के 34 सालों में किसी भारतीय फिल्मकार ने उन पर फिल्म बनाने की कभी गंभीर कोशिश नहीं की। राज्यसभा में पंडित नेहरू से इस बाबत पूछा गया था। इसके जवाब में पंडित नेहरू ने कहा था, “गांधी पर फिल्म बनाने की चुनौती मुश्किल है। कोई भी सरकारी विभाग इसे नहीं संभाल सकता। सरकार इस योग्य नहीं है और हमें इस काम के योग्य व्यक्ति नहीं मिला।”[7]

बहरहाल ‘गाँधी’ फिल्म ने भारतीय फिल्मकारों को जोश और विषय दिया। 1982 के बाद अनेक फिल्में आईं, जिनमें किसी न किसी रूप में गांधी दिखाई पड़ते हैं। वह कहीं चरित्र हैं, तो कहीं नायक। एक-दो फिल्मों में वह प्रति नायक की भूमिका में भी नजर आते हैं। अच्छी बात है कि उन्हें पवित्र आत्मा की तरह निरूपित करने की जबरन कोशिश नहीं की गई है। सरकार ने उन पर या उनसे प्रभावित फिल्मों के प्रति किसी प्रकार की सख़्ती नहीं दिखाई।

1982 के बाद महात्मा गाँधी पर बनी 10 से अधिक फिल्मों में गाँधी के व्यक्तित्व को अलग-अलग तरीके से समझने और व्यक्त करने का प्रयास दिखता है। कुछ फिल्मों में उनकी प्रासंगिकता और उपयोगिता पर भी विचार किया गया। ‘मैंने गाँधी को नहीं मारा’, ‘लगे रहो मुन्नाभाई’, ‘ गाँधी टु हिटलर’ और ‘रोड टु संगम’ जैसी फिल्मों में गाँधी के विचारों

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

और नैतिकता को आज के संदर्भ में पेश किया गया है। इनमें ‘लगे रहो मुन्नाभाई’ ज्यादा लोकप्रिय साबित हुई। राजकुमार हीरानी ने ‘ गाँधीवाद’ को ‘ गाँधीगिरी’ शब्द दिया और गांधी दर्शन को युवा दर्शकों के बीच ले गए। फिल्म अध्येताओं ने आशुतोष गोवारिकर की ‘लगान’, ‘जोधा अकबर’ और ‘स्वदेश’ में प्रच्छन्न रूप से गांधी के विचारों को दृश्यों में बदलते देखा है।

गाँधी पर आधारित तीन महत्वपूर्ण फिल्में

पहली तो रिचर्ड एटनबरो की ‘ गाँधी’ फिल्म होगी। दशकों में कोई ऐसी फिल्म बन पाती है। इसे भारत और विदेशों में समान रूप से प्रशंसा और प्रतिष्ठा मिली। यह फिल्म उस दौर की राजनीति को भी समेटती है। स्वंतत्रता आंदोलन में अग्रणी और नियामक भूमिका निभा रहे गांधी के सत्य, अहिंसा और असहयोग के प्रयोगों को यह फिल्म बखूबी दिखाती है और दुनिया को महती संदेश देती है। इस फिल्म को ऑस्कर की अनेक श्रेणियों में पुरस्कार मिले थे।

श्याम बेनेगल निर्देशित ‘द मेकिंग ऑफ महात्मा’ फिल्म गाँधीजी के आरंभिक जीवन को रिकॉर्ड करती है। दक्षिण अफ्रीका में बिताए उनके 21 सालों के प्रवास और अनुभवों को सहेजती यह फिल्म महात्मा बन रहे गाँधी से परिचित कराती है। सामान्य बैरिस्टर से सजग राजनीतिज्ञ बनने की गाँधी की प्रक्रिया को इस फिल्म से समझा जा सकता है। भारत आने के बाद सक्रिय हुए गाँधी में आजादी की चेतना दक्षिण अफ्रीका में ही विकसित हुई थी।

फिरोज अब्बास खां की ‘गाँधी माई फादर’महात्मा गाँधी के पारिवारिक जीवन के संवेदनशील पहलू को छूती है। बड़े बेटे हरिलाल से उनके संबंध सामान्य नहीं रह गए थे। दोनों के सोचने और जीने के तरीके अलग थे। यह फिल्म गांधी को एक व्यक्ति और पिता के तौर पर चित्रित करती है।

इन तीनों फिल्मों को एक साथ आगे-पीछे देखें, तो गांधी के संपूर्ण जीवन की झलक मिल जाती है। जयप्रकाश चौकसे पर सिनेमा का असर रहा है। वे कहते हैं कि बचपन में ही सिनेमा के बिच्छू ने उन्हें काट लिया था। समय बीतने के साथ बिच्छू का जहर चढ़ता गया। ‘आज़ादी के पहले पैदा हुए चौकसे गाँधी जी से भी प्रभावित रहे। हाल ही में उनकी नई पुस्तक 'महात्मा गाँधी और हिंदी सिनेमा' आई है। इस पुस्तक में उन्होंने हिंदी सिनेमा पर गाँधी जी के प्रभाव की विवेचना की है। आजादी के पहले देवकी बोस की फिल्मों से लेकर आमिर खान के टीवी शो 'सत्यमेव जयते' तक में उन्होंने गाँधी जी के असर को आंका है। हर दौर की फिल्मों में उन्होंने गांधी जी के विचारों को देखने-परखने की कोशिश की है। उनकी

The Asian Thinker

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

राय में सिनेमा के प्रारंभ से ही उसमें गांधीवादी मूल्य स्थापित हो गए और आज तक कायम हैं।’[8]

यह एक प्रकार की ऐतिहासिक और वैचारिक विडंबना है कि गाँधी जी ने विशेष आग्रह पर अपने जीवन में केवल एक फिल्म देखी। वे फिल्मों को लेकर बहुत उत्साहित और सहिष्णु नहीं थे।स्वाधीनता आंदोलन के नेतृत्व की गंभीर जिम्मेदारी की वजह से गाँधी जी फिल्मों को वक्त नहीं दे पाए और न उसके प्रभाव का आकलन कर सके। ‘ गाँधी जी ने फिल्मों को स्वीकार कर लिया होता तो भारतीय समाज में दशकों तक हेय दृष्टि से देखे गए सिनेमा का स्वरूप और विकास भिन्न तरीके से हुआ होता।’७ हम शायद और बेहतर फिल्में बना रहे होते।जयप्रकाश चौकसे की 'महात्मा गाँधी और हिंदी सिनेमा' में गाँधी जी की गतिविधियों की भी संक्षिप्त जानकारी है।

इन गतिविधियों को सिनेमा के संदर्भ में देखने और समझने की कोशिश की गई है। गाँधी जी की मृत्यु के पश्चात उनके विचारों (गाँधीवाद) से प्रभावित फिल्मों का उल्लेख करते समय चौकसे बार-बार बताते हैं कि कैसे हमारे फिल्मकार जाने-अनजाने गांधी जी से प्रेरित हुए। फिल्मों में गाँधीवाद और गाँधी जी के प्रिय जीवन मूल्यों को फिल्मकारों ने पूरी तरजीह दी। कथ्य के स्तर पर फिल्मों की सामाजिक जागृति पर गाँधी जी के अभियानों और विचारों का सीधा असर है।‘ वे मुद्दे उनके निधन के छह दशक बाद भी बने हुए हैं। कहीं न कहीं यह देश उन सपनों को पूरा नहीं कर सका, जो गाँधी जी ने एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर देश के लिए देखे थे।’9जयप्रकाश चौकसे की पुस्तक सूचना और विवेचना तो देती है, लेकिन गाँधीवादी मूल्यों के फिल्मों पर प्रभाव का सटीक विश्लेषण नहीं करती। शायद यह ध्येय भी नहीं रहा हो। उन्होंने रोचक और किस्सागो शैली में महात्मा गाँधी और हिंदी सिनेमा के संबंधों के निरंतर प्रवाह को इस पुस्तक में पेश किया है।

‘महात्मा “गाँधी ने साहित्य एवं कला के संबंध में कहा है कि जिस कला के पीछे प्राणियों पर ज़ुल्म, उनकी, हिंसा ,उत्पीड़न आदि हो। उसमें बाह्य सौंदर्य कितना भी हो तो भी वह कला कलि अथवा शैतान ही दूसरा नाम है । जो कला मनुष्य की हीन वृत्तियों को उभारती और भोगों की इच्छा को बढ़ाती है वह कला गद्यसाहित्य की श्रेणी में ही समझी जाएगी ।महात्मा गाँधी द्वारा साहित्य एवं कला संबंधी विचार यह दर्शाता है कि मनुष्य को सत् साहित्य तथा कला का ही दर्शन-अध्ययन करना चाहिए क्योंकि गलत साहित्य तथा कला द्वारा सत्यं शिवं सुंदरं की स्थापना संभव नहीं है। उसके द्वारा समाज में मानवीय दुर्बलताओं का ही प्रचार-प्रसार होगा ।’[9]

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

डॉ. विजय अग्रवाल ने अपनी पुस्तक सिनेमा और समाज में लिखा है कि मैंने 1970 में एक फिल्म देख थी -'लाखों में एक ,जिसका नायक महमूद था। जिस समय मैंने यह फिल्म देखी थी ,उस समय तक मैं विद्यालय की पढ़ाई छोड़ चुका था। इस फिल्म का नायक महमूद लोगों के घरों में नौकर की तरह काम करता हुआ अपनी पढ़ाई पूरी करता है। मुझे भी लगा कि मैं भी अपनी पढ़ाई जारी रख सकता हूं और मैंने स्वाध्यायी छात्र के रूप में अपनी पढ़ायी शुरू कर दी।'[10] श्वेत-श्याम फिल्मों से लेकर रंगीन चलचित्रों तक भारतीय सिनेमा पर महात्मा गाँधी के विचारों और दर्शन की अमिट छाप रही है। 'दीवार पर टंगी उनकी तस्वीर ने फिल्मों में कभी नायक को भ्रष्टाचार से लड़ने के लिये प्रेरित किया, तो कभी शांति और अहिंसा का संदेश फैलाने के लिये उनके विचारों का सहारा लिया गया। गांधी की जीवनी एवं उनके विचार कई दशकों से फिल्मकारों को प्रेरित करते आ रहे हैं।'[11] गाँधी जी के प्रपौत्र तुषार गाँधी कहते हैं कि 'महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व को केंद्र में रख कर फिल्मों का निर्माण करना जितना सराहनीय है उतना ही जटिल भी। बापू के व्यापक और विविधतापूर्ण व्यक्तित्व को चंद घंटे में परदे पर पूरे न्याय के साथ पेश करना बहुत ही पेचीदा काम है लेकिन हिन्दी सिनेमा ने काफी हद तक इस काम को बखूबी अंजाम दिया।'[12] गाँधी जी ने जीवन में केवल 'दो फ़िल्में 'मिशन टू मॉस्को' और निर्देशक विजय भट्ट की 'राम राज्य' देखी। जबकि उनके विचारों से प्रभावित हो कर ना जाने कितनी फ़िल्में बनीं और आज भी बन रही हैं लेकिन फ़िल्में महात्मा गाँधी को कभी प्रभावित नहीं कर सकीं। वह इस माध्यम से जीवन के अंत तक असहमत रहे।'[13]

निष्कर्ष

महात्मा गांधी और हिंदी सिनेमा के संबंधों की यात्रा एक रोचक विरोधाभास को दर्शाती है। जहाँ एक ओर गांधीजी ने सिनेमा को कभी महत्व नहीं दिया और इसे सामाजिक विकृति का माध्यम माना, वहीं दूसरी ओर उनके विचार, सिद्धांत और जीवनदृष्टि ने भारतीय सिनेमा को गहराई से प्रभावित किया। अनेक फिल्मकारों ने अपनी फिल्मों में गांधीवादी मूल्यों जैसे सत्य, अहिंसा, समानता, धार्मिक सहिष्णुता, सामाजिक न्याय और नैतिकता को कथ्य का आधार बनाया।

यह स्पष्ट है कि गांधीजी का प्रभाव केवल राजनीतिक या सामाजिक क्षेत्रों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह रचनात्मक माध्यमों, विशेषतः सिनेमा की आत्मा में भी रचा-बसा है। *गांधी* (1982), *द मेकिंग ऑफ द महात्मा*, *गांधी माई फादर* और *लगे रहो मुन्नाभाई* जैसी फिल्मों ने गांधी के विचारों को नए संदर्भों में प्रस्तुत कर युवाओं तक पहुँचाने का सफल

Year-7 Volume: I, January-March, 2025 Issue-25 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

प्रयास किया।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भले ही गांधीजी ने सिनेमा को स्वीकार नहीं किया, परंतु सिनेमा ने उन्हें आत्मसात किया। उनके सिद्धांतों ने फिल्मकारों को समाजोन्मुखी दृष्टि प्रदान की, और हिंदी सिनेमा को केवल मनोरंजन का साधन न रहकर सामाजिक चेतना का माध्यम बनने की दिशा में प्रेरित किया। गांधीवाद आज भी भारतीय सिनेमा की वैचारिक धारा में जीवंत है और समय-समय पर नए रूपों में प्रकट होता रहता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. किदवई रशीद, भारतीय सिनेमा पर गाँधी का गहरा प्रभाव नज़र आता है; 04 अक्टूबर 2019, ORF, होम हिंदी पोस्ट।
2. यथोपरि।
3. यथोपरि।
4. यथोपरि।
5. यथोपरि।
6. ब्रहात्मज अजय, सिनेमा और गाँधी जी; 19.11.2012, Jagarn. com
7. ।यथोपरि।
8. यथोपरि।
9. यथोपरि।
10. चतुर्वेदी मनोज, महात्मा गाँधी और सिनेमा; प्रवक्ता.कॉम
11. भारतीय सिनेमा पर गाँधी के विचारों की अमिट छाप ; भाषा, 01.10.2019 (नवभारत टाइम्स)
12. कुमार प्रदीप, भारतीय सिनेमा में बहती गाँधी की विचारधारा; 02.10.2011, Hindi filmbet .
13. रिजवी इकबाल, सिनेमा से हमेशा असहमत रहे गाँधी जी;29.09.2019, m.satyahindi.com